विजय उपाध्याय

अपनी जात

ई-मेल-viku6862@gmail.com

मंत्री जी के पी ए बहुत होशियार हैं, उनके पलक झपकते ही मंशा भाँपकर त्वरित कार्यवाही अमल में लाते हैं और मंत्री जी गदगद, आखिर वह अपनी जात का है।

अपने पूरे संसदीय क्षेत्र के अधिकारियों की कुंडली पी ए के पास है। अपनी सरकार के आते ही अपनी जात के लोगों को कहाँ-कहाँ फिट करना है। वह बखूबी जानते हैं क्योंकि मंत्री जी अपनी जात को ऊपर उठाने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

दुर्भाग्य से मंत्री जी गंभीर बीमार पड़ गये। देश के सबसे बड़े अस्पताल में कार्यरत इंटेलीजेंट डाक्टर को दिखाने के लिए पी ए को अपाइंटमेंट लेने के लिए कहा। खूब कसरत करने के बाद डॉक्टर से समय लिया गया और निर्धारित समय पर मंत्री जी के साथ वहाँ पहुँच गए। बाहर नेमप्लेट देखकर ही मंत्री जी भड़क गए यह किसके पास ले आए?

पी ए ने मियमियाते हुए कहा, ''साहब, अपनी जात का है।''

मंत्री जी और भड़क गए, ''साले! अपनी जात वाले को अन्तिम संस्कार या तेरहवीं में बुला लेना। पहले इलाज के लिए किसी बामन, बनिये या ठाकुर को ढूँढ।''

मंत्री जी बदहवास बुदबुदा रहे हैं—'यह 45% के कोटे वाले डॉक्टर पता नहीं कौन-सी दवा डालकर मरवा देंगे।'

पी ए साहब हैरान हैं—'सारी उम्र दूसरों के हक मारकर जिनकी पैरोकारी की उनकी योग्यता के असली सर्टिफिकेट तो दिमाग में पहले से ही चस्पा हैं।'

कबाड़ी

विजय उपाध्याय

एक महामानव हुए, महाबली, पराक्रमी। जो कुछ भी दिखता, सब बटोरकर अपने घर-आँगन या पिछवाड़े सजा लेते। उनके अनुसार, कोई भी चीज गैर-उपयोगी नहीं होती; संचय कीजिए, वक्त-बेवक्त उसकी कीमत मिल ही जाती है।

फिर एक दिन यमराज अपने लाव-लश्कर के साथ उस महाप्रतापी को लेने प्रकट हुए—"चलो वत्स! तुम्हारे महाप्रयाण का समय आ गया।"

यह देखकर महापुरुष हकलाये—"मैंने इतने यत्न से यह सारा साम्राज्य स्थापित किया है। इसका भोग तो करने दीजिए प्रभु!"

यमराज बोले, "ठीक है, आप अपनी अर्जित कमाई साथ ले चल सकते हैं।"

महामानव गदगद हो गए। उन्होंने सेवकों को आदेश दिया—"सब पैक कर यमराज के भैंसे पर लाद दो।"

भैंसा मुस्कुराया और बोला—"सिर्फ सत्कर्मों की पूंजी का भार वहन कर सकता हूँ। जो भी कुछ पुण्य, नेकनीयत से इंसानियत की कमाई होगी, वही मेरी पीठ पर टिक सकती है।"

यमराज मुस्कुराए।

उनका भैंसा बहुत ही हल्का महसूस कर रहा है; क्योंकि कबाड़ वहीं छितरा गया था।

बेकार आदमी

चर्चाएँ आम हैं और अफवाहें गर्म। नया साहब आ रहा है । क्या फायदा?

नाक में दम कर देगा। ईमानदारी के कुत्ते ने काटा है उसे।

राजा हरिश्चंद्र की औलाद है।

सुना है—राजनीतिक संघ का पिट्ठू है, डरता नहीं किसी से भी।

तबादला भी किसी मंत्री ने करवाया है। सुना है, वह आम जनता के सामने ही नेताओं और अधिकारियों को खरी-खोटी सुना देता है। इसीलिए वहाँ के नेता ने हाथ जोड़कर उसकी पसंद पूछी और यहाँ तबादला कर दिया।

अफसरों की जन्म कुंडली अक्सर नई पोस्टिंग पर ज्वाइन करने से पहले ही वहाँ पहुँचकर खुल जाती है। माहौल में नीरसता और बेचैनी व्याप्त है। अधीनस्थ कर्मचारी ठेकेदार और कनिष्ठ अधिकारी कुलबुला रहे हैं। उन्होंने स्थानीय विधायक से एक स्वर में गुहार लगाई—‘‘जनाब, भूखे मर जाएँगे सारे और आपकी सेवा टहल भी बंद होगी... फिर मत कहना, बताए देते हैं। एकदम बेकार आदमी है वह। न खाता है ना खाने देता है।‘’

स्थानीय विधायक ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तुरंत मुख्यमंत्री को नोट लिखा—"फलां अधिकारी को जनहित में कहीं और लगाया जाए ताकि विकास की गति निर्बाध चलती रहे।‘’